ISSN 2319-5339 IISUniv.J.A. Vol.9(1), 139-145 (2020)

सृष्टि की उत्पत्ति एवं उसका विकास-क्रम : वैदिक वाङ्मय के सन्दर्भ मे

उष्मा यादव

सार

सृष्टि की उत्पत्ति कैसे हुई ? सृष्टि का विस्तार किस प्रकार हुआ ? वैदिक मनीषीयों के चिन्तन का यही मुख्य विषय रहा है। वेदों का मूल विषय 'सृष्टि विज्ञान' या 'सृष्टि विद्या' है। ऋग्वेद के 'नासदीय सूक्त' में सृष्ट्युत्पत्ति के पूर्व विद्यमान अवस्था का चित्रण करते हुए सृष्टि क्रम प्रतिपादित किया गया है। जन्तु विज्ञान के साथ ही वनस्पति विज्ञान का आदिम स्वरूप वैदिक मंत्रों में समाहित है। ऋग्वेद में वनस्पति के लिए 'वनिन्' एवं 'ओषधि' शब्द प्रयुक्त हुआ है। अथर्ववेद में चतुर्विध वनस्पिति की चर्चा की गयी है- वनस्पति, वानस्पत्य, ओषधि और वीरूध्। वेदों में जैव विकास क्रम के सन्दर्भ में निहित ज्ञान की सूक्ष्म विवेचना आवश्यक है। सृष्टि की उत्पत्ति तथा उसके मूल कारण के विषय में प्राचीन काल में अद्यतन मानव जिज्ञासा यथावत् बनी हुई है। वर्तमान विज्ञान भी अनेकानेक प्रयोगों द्वारा नित् नवीन सिद्धान्तों की स्थापना का प्रयास कर रहा है। इस विषय में अन्तिम निर्णय आज भी अप्राप्त है।

मुख्य शब्द : वैदिक, सृष्टि, उत्पत्ति, वैदिक, वाङ्मय

वेद भारतीय मनीषियों की अतुलनीय ज्ञानराशि का सर्वोत्कृष्ट स्वरूप हैं जिसमें परा एवं अपरा विद्या के मूल तत्व का सहज ही अन्वेषण किया जा सकता है। प्राचीन ऋषियों ने ज्ञान-विज्ञान के प्रत्येक पक्ष का गहन चिन्तन किया था। वेदों में भौतिकी, रसायन, वनस्पति, प्रौद्योगिकी, कृषि, जन्तु विज्ञान, पर्यावरण, ज्योतिष एवं खगोल विज्ञान से सम्बद्ध प्रचुर सामग्री विद्यमान है। असंदिग्ध एवं निरपेक्ष ज्ञान ही विज्ञान है। वैदिक वाङ्मय में यद्यपि वैज्ञानिक तथ्यों, यन्त्रों तथा प्रयोगशालाओं का प्रत्यक्षः वर्णन तो नहीं मिलता किन्तु उनके मन्त्रों में विज्ञान के प्रत्येक शाखाओं के तत्तव बीज रूप में निहित है। वैदिक मंत्रों में सृष्टि की उत्पत्ति तथा उसके विकासक्रम की सूक्ष्म विवेचना दृष्टिगत होती है।

वेद मानव मनीषा की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धियों का अमूल्य अंश है। ज्ञानार्थक 'विद्' धातु से निष्पन्न 'वेद' शब्द 'ज्ञानराशि' का वाचक है। मनु ने वेद को सम्पूर्ण ज्ञान का स्रोत माना है।1 ज्ञान और विज्ञान में अबिनाभाव सम्बन्ध है; ज्ञान के होने पर विज्ञान की सत्ता अवश्य ही होती है। अतएव ज्ञानराशि वेद में वैज्ञानिक तत्त्वों की गवेषणा की जा सकती है।

विज्ञान अंग्रेजी के "Science" शब्द का हिन्दी रूपान्तर है जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के "Science" शब्द से हुई है। इसका अर्थ है 'ज्ञान' (Knowledge) या 'जानना' (To know)।

वस्तुतः विज्ञान का अभिप्राय है- 'विशिष्ट ज्ञान।' असंदिग्ध एवं निरपेक्ष ज्ञान को विज्ञान कहा जाता है। विज्ञान के व्युत्पत्यात्मक अर्थ की दृष्टि से वेद एवं विज्ञान में घनिष्ठ सम्बन्ध है क्योंकि वेंदों का प्रमुख प्रतिपाद्य पूर्ण एवं विशुद्ध ज्ञान ही है, जो 'ब्रह्मज्ञान' है। 'परमेश्वर का ज्ञान' ही एक ऐसा ज्ञान है जो सभी ज्ञानों की निरातिशयता या ज्ञान की पराकाष्ठा आ आधार है। 'तैत्तिरीयोपनिषद्' में कहा गया है कि सभी देवगण ब्रह्म के रूप में विज्ञान की ही उपासना करते हैं। विज्ञान को ब्रह्म ही जानों।2 'बृहदारण्यकोपनिषद्' में ब्रह्म को विज्ञान और आनन्द इन दोनों विशेषणों से युक्त बताया गया हैं।3 वेद एवं विज्ञान के सम्बन्ध को प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती ने इन शब्दों में प्रतिपादति किया है, परीक्षा द्वारा अपरोक्ष ज्ञान पाने में ही विज्ञान का आग्रह है एवं लक्ष्य को स्थिर रखकर पथ को सीधा कर लेने भर से यह वेद व ब्रह्मज्ञान का पथ हो सकता है। वेद व विज्ञान के बीच एक बहुत घनिष्ठ प्रकार की आत्मीयता है।4

वैदिक मनीषीयों को भौतिक जगत् से सम्बद्धित विज्ञान का विस्तृत वर्णन अपेक्षित नहीं था अतएव उन्होंने वेदों में वैज्ञानिक तथ्यों का साक्षात् वर्णन न करके प्रतीक या संकेत रूप में वर्णन किया है। वैदिक मन्त्रों के अर्थ का प्रतिपादन अत्यन्त गूढ़ है। अधिकांश मंत्र आधिभौतिक, आधिवदैविक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से अनेक अर्थों को प्रकट करते हैं। चारों वेदों पर पूर्ण भाष्य करने वाले सायणाचार्य ने प्रायः मंत्रों का आधिभौतिक, अर्थ प्रस्तुत किया हैं जिसमें ब्राह्य कर्मकाण्ड, पूजा एवं उपासना का समावेश है। इसी प्रकार मीमांसकों ने भी वैदिक मंत्रो की याज्ञिकी व्याख्या प्रस्तुत की है। मंत्रों के आधिदैविक अर्थ करने पर प्रत्येक सूक्ष्म से सूक्ष्म पदार्थ या कार्य के वैज्ञानिक रहस्य प्रकट हो सकते हैं और अध्यात्मवादियों को मंत्रों में सर्वत्र अध्यात्म प्रतिबिम्बित हो सकता है।

सृष्टि की उत्पत्ति कैसे हुई? सृष्टि का विस्तार किस प्रकार हुआ? वैदिक मनीषीयों के चिन्तन का यही मुख्य विषय रहा है। वेदों का मूल विषय 'सृष्टि विज्ञान' या 'सृष्टि विद्या' है। गोविन्द चन्द्र पाण्डे के शब्दों में ''वैदिक विज्ञान को मूल रूप से सृष्टि विद्या या कौसमालॉजी कहा जा सकता है।''5 ऋग्वेद के 'नासदीय सूक्त' में सृष्ट्युत्पत्ति के पूर्व विद्यमान अवस्था का चित्रण करते हुए सृष्टि क्रम प्रतिपादित किया गया है। यह सृक्त दार्शनिक विवेचना के साथ ही वैज्ञानिक पृष्ठभूमि में भी विचारणीय है। इस सूक्त में ऋषि कहते हैं कि सृष्टि के आरम्भ में न तो असत्(अभावात्मक तत्व) था, न सत्(सत्तात्मक तत्व) था। पृथ्वी, आकाश, सप्त, लोक ब्रह्माण्ड, गम्भीर जल, जन्म, मृत्यु, रात्रि-दिन इत्यादि कुछ भी नहीं था।6 तब प्राण (वायु) से युक्त, क्रिया से शून्य, अपनी माया के साथ एक तत्व (ब्रह्म) विद्यमान था और उससे परे कुछ भी नहीं था।7 पुनः ऋषि कहते हैं कि प्रलयकाल में सृष्टि अंधकार से आवृत्त थी, सब ओर जल ही जल था। यह जगत तमस् या अज्ञान रूप मूल करण में विद्यमान था। तब एक तत्व तप की महिमा से उत्पन्न हुआ।8 तत्पश्चात् वह कारण के साथ एकीभूत हुआ और परमेश्वर के मन में सर्वप्रथम सृष्अि रचना की इच्छा अर्थात् संकल्प रूप सृष्टि का बीज उत्पन्न हुआ, जिससे सृष्टि प्रकट हुई।9 इन ऋचाओं में सृष्टि के तीन कारण प्रतिपादित किये गये है- नासदासीत्(अर्थात् अविद्या), कामस्तदग्रे(अर्थात् संकल्प) और मन रेतः (अर्थात् सृष्टि का बीज)। दाक्षायणी सूक्त (ऋ0वे0 10.72.1-9) में

सृष्ट्युत्पत्ति का विवेचन करते हुए कहा गया है कि देवताओं के उत्पन्न होने से पहले असत् से सत् की उत्पत्ति हुई ।10

नासदीय सूक्त में प्रतिपादित सृष्टि-उत्पत्ति सम्बन्धी मत की तुलना ब्रह्माण्ड-विकास के 'महाविस्फोट-सिद्धान्त'11 (Big Bag Theory) से की जा सकती है। यह सिद्धान्त नासदीय सूक्त के समाने ही यह मानता है कि सृष्टि के पूर्व कुछ भी नहीं था। एक विस्फोट के पश्चात् निहारिकाओं, सौरमण्डलों, ग्रहों और उपग्रहों की उत्पत्ति हुई। फिर पृथ्वी पर स्थित विशाल जलराशि में जैव विकास का मूल तत्त्व 'न्यूलिक अम्ल' उत्पन्न हुआ, जिसे जीवन का प्रथम लक्षण कहा जाता है।

नासदीय सृक्त में आधुनिक विज्ञान में चर्चित 'गॉड पार्टिकल' का अप्रत्यक्ष रूप में उल्लेख किया गया है। गार्ड पार्टिकल ऊर्जा और पदार्थ (एनर्जी मैटर) के बीच की कड़ी है। भौतिक विज्ञान के अनुसार ऊर्जा से पदार्थ उत्पन्न होता है और पदार्थ को पुनः ऊर्जा में परिवर्तित किया जा सकता है। किसी प्रदार्थ के अणु का विखण्डन होने पर पर नाभिक (न्यूक्लियस) के चारों ओर भ्रमण करते हुए परमाणु (इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, न्यूट्रॉन इत्यादि) परिलक्षित होते हैं जो ऊर्जा और पदार्थ के मध्य की अवस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस प्रकार सृष्टि प्रक्रिया में 'सत्ता' या 'रियैलिटी' का स्वरूप न तो पूर्णतः 'सत्' कहा जा सकता है, न असत् और न 'सत् एवं असत्' दोनों कहा जा सकता है। गार्ड पार्टिकल सत् एवं असत् इन दोनों कोटियों से भिन्न वह अदृश्य कण या शक्ति है जो अणु के स्वरूप का निर्माण करती है और जिसके मिलने पर पदार्थ की उत्पत्ति होती है। ऋग्वेद में सत् और असत् से भिन्न एक तत्त्व का उल्लेख है जो शून्य (तुच्छ्यम्) के आवृत्त गार्ड पार्टिकल जैसे बीज (आभु) को जन्म देता है,12 यही तत्त्व अन्ततः प्रकाश में परिवर्तित होकर13 प्रथमतः आकाश को तदनन्तर क्रमशः वायु, अग्नि आदि तत्त्वों को उत्पन्न करता है।

सृष्टि की उत्पत्ति से सम्बन्धित सारगार्भित चिन्तन 'हिरणयगर्भ सूक्त' (10.121.1-10) में भी किया गया है। जिसके अनुसार सर्वप्रथम अर्थात् सृष्ट्युत्पत्ति से पूर्व हिरण्यगर्भ उत्पन्न हुए। वे उत्पन्न होते ही सब प्राणियों के स्वामी हुए तथा आकाश और पृथ्वी को धारण (अपने स्थान पर स्थापित) किये।14 इस सूक्त में, जिन प्रजापति ने आत्मा (प्राण) एवं बल प्रदान किया, जिसकी आज्ञा विश्व (सभी प्राणी) और देवता मानते हैं, जिसकी छाया अमृतमयी है और मृत्यु भी जिसके अधीन है, उन 'क' संज्ञक प्रजापति को सृष्टिकर्त्ता मानते हुए उसे हवि देने का विधान किया गया।15

सृष्टिकर्त्ता के स्वरूप को 'पुरूष सूक्त'(10.90.1-16) में निरूपित करते हुए उसे सहस्रों मस्तक, सहस्रों नेत्र और सहस्रों चरण वाला विराट् पुरूष कहा गया है जो पृथ्वी को सब और से व्याप्त करके दस अंगुलियों के बराबर बढ़कर स्थित है।16 आशय यह है कि विराट् पुरूष सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को भीतर और बाहर से व्याप्त किए हुए हैं। 'यह सब कुछ दृश्यमान जगत्, भूतकाल और भविष्यत् काल पुरूष रूप ही है।'17

पुरूष सुक्त में प्रतिपादित यज्ञ वस्तुतः सृष्ट्युत्पत्ति की प्रक्रिया का ही प्रतिरूप है। मंत्रों में वर्णन है कि आदिपुरूष ब्रह्म अपने को विराट् (जिसमें विविध पदार्थ विद्यमान हो वह विराट्)19 रूप में

उत्पन्न किया। इस प्रकार विराट् का तात्पर्स ब्रह्माण्ड या व्यक्ति जगत् से है। पुनः उसी का आश्रय लेकर पुरूष (जीवात्मा) उत्पन्न हुआ20 अर्थात् विराट् के देह को अधिकरण बनाकर उस शरीर का अभिमानी एक पुरूष उत्पन्न हुआ। तत्पश्चात् सृष्टि-क्रम को आगे बढ़ाने के लिए देवताओं ने पुरूष रूप हवि द्वारा यज्ञ का अनुष्ठान किया।21 उस समय वाह्य द्रव्यों की उत्पत्ति न होने से हवि का अभव था, अतएव देवों ने पुरूष की हवि रूप में मानस सड़कल्पना की और पुरूष रूप हार्दिक हव्य द्वारा मानसिक यज्ञ किया। उसमें घृत, समिधा (ईंधन) एवं हवि के रूप में क्रमशः बसन्त, ग्रीष्म एवं शरद् ऋतुएँ प्रयुक्त हुई है।22 देवताओं के इस विराट् यज्ञ से समस्त प्राणियों, वेदों और सूर्य-चन्द्र इत्यादि ग्रहों की उत्पत्ति हुई। इस वैदिक मान्यता के अनुसार प्रजापति ने सृष्टि-रचना रूपी यज्ञ का अनुष्ठान किया, जिसमें उसने अपनी हवि दी। फलस्वरूप सम्पूर्ण चराचर जगत् की उत्पत्ति हुई। यह धारणा सम्पूर्ण सांसारिक तत्तव के मूल में ब्रह्म के अस्तित्व को स्वीकार करती है। वस्तुतः वैदिक यज्ञ प्राकृतिक चक्र या सृष्टि चक्र का द्योतक है जो विश्व में प्रतिक्षण चल रहा है। इसी के द्वारा सृष्टि का प्रतिकण हर क्षण परिवर्तित हो रहा है। यजुर्वेद में भी यज्ञ को सृष्टि का केन्द्र माना गया है।23

जीव विज्ञान की दृष्टि से वैदिक वाड्मय ज्ञान का अथाह भण्डार है। वैदिक मंत्रों में जीवधारियों एवं वनस्पतियों के नाम, वर्गीकरण एवं गुण-कर्म विषयक पर्याप्त सामग्री प्राप्त होती है। वनस्पति एवं जन्तु के अध्ययन से सम्बद्धित 'जीव-विज्ञान' आधुनिक विज्ञान की महत्तवपूर्ण शाखा है जो वनस्पति विज्ञान (Botony) एंव जन्तु विज्ञान (Zoology), इन दो उप-शाखाओं में विभक्त है। वेदों एवं ब्राह्मण ग्रंथों के अनेक मंत्रों में पशु की कामना की गयी है। ऋग्वेद में तो नववधू को यह आर्शीर्वाद दिया गयाह है कि वह द्विपाद और चतुष्पाद पशुओं के लिए कल्याणकारी हो।[24] पशुओं के संरक्षण और संवर्धन पर बल देते हुए ऋषि देवताओं से प्रार्थना करते हैं, ''हमारे पशुओं को अभयत्व दो।''[25] ऋग्वेद में जीवधारियों को तीन वर्गों में विभक्त किया गया है-(1) वायव्य जीव आकाश में विचरण करने वाले जन्तु। यथा पक्षी; (2) आरण्य जीव-जंगल में रहने वाले पशु। यथा-सिंह, व्याघ्र, आदि, (3) ग्राम्यजीव-गाँव में रहने वाले मनुष्य एवं पशु यथा-गो, अश्व आदि।26 पुनः ग्राम्य पशुओं में सात प्रकार के पशुओं की गणना की गयी है।27 अथर्ववेद में द्विविधि पशुओं का वर्णन किया गया है-(1) पार्थिव (थलचर और जलचर) (2) दिव्य (नभचर)। पार्थिक पशुआकं में आरण्य और ग्राम्य पशुओं की गणना की गयी है और दिव्य पशुओं में अपक्ष (बिना पंख वाले) एवं पक्षी (पंख वाले) को समाहित किया गया है।[28] यजुर्वेद में एकशफ (एक खुर वाले जैसे अश्व, गर्दभ आदि), क्षुद्र (भेड़-बकरी आदि छोटे पशु) एवं आरण्य (सिंह आदि वन्य पशु) पशुओं का उल्लेख मिलता है।[29]

जन्तु विज्ञान के साथ ही वनस्पति विज्ञान का आदिम स्वरूप वैदिक मंत्रों में समाहित है। ऋग्वेद में वनस्पति के लिए 'वनिन्' एवं 'ओषधि' शब्द प्रयुक्त हुआ है।[30] अथर्ववेद में चतुर्विध वनस्पिति की चर्चा की गयी है- वनस्पति, वानस्पत्य, ओषधि और वीरूध्।[31] यह वर्गीकरण वृक्षों के 'आकार' के आधार पर किया गया है। बड़े वृक्षों को वनस्पति, उनसे छोटे वृक्षों को वानस्पत्य, पौधों को औषधि और लता या गुल्म या गुल्म (झाड़ी), को वीरुध् कहा गया है।[32] तृण का भी उल्लेख

मिलता है।[33] ऋग्वेद के दशम मण्डल (10.97.1-23), यजुर्वेद[34] और अथर्ववेद35 में वृक्षों के गुण-धर्मों एवं महत्व को प्रतिपादित किया गया है।

वेदों में जैव विकास क्रम के सन्दर्भ में निहित ज्ञान की सूक्ष्म विवेचना आवश्यक है। सृष्टि की उत्पत्ति तथा उसके मूल कारण के विषय में प्राचीन काल में अद्यतन मानव जिज्ञासा यथावत् बनी हुई है। वर्तमान विज्ञान भी अनेकानेक प्रयोगों द्वारा नित् नवीन सिद्धान्तों की स्थापना का प्रयास कर रहा है। इस विषय में अन्तिम निर्णय आज भी अप्राप्त है। ऋषियों ने 'पुरूष सुक्त', 'हिरण्यगर्भ सूक्त' एवं 'नासदीय सूक्त' में सृष्टि उत्पत्ति के विषय में जो चिन्तन प्रस्तुत किया है वह इस दिशा में नव दृष्टि प्रदान करने वाला है। अतः वैदिक मंत्रों की वैज्ञानिकता को समझने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ-सूची

मनु0 2.7-सर्वज्ञानमया हि सः।

तै0उ0 2.5- विज्ञानं देवाः सर्वे। ब्रह्म ज्येष्ठमुपासते। विज्ञानं ब्रह्म चद्वेद। तै0उ0 3.5- विज्ञानं ब्रह्मेति व्यजानात्।

बृ0उ0 3.9.28-विज्ञानमानन्द ब्रह्म।

स्वामी प्रत्यगांत्मानन्द सरस्वती-वेद व विज्ञान, पृ0सं0-4

गोविन्द चन्द्र पाण्डे- वैदिक संस्कृति, पृ0सं0-515

ऋ0वे0 10.129.1-2

ऋ0वे0 10.129.2-आनीदवातं स्वधया तदेकं तस्माद्धान्यन परः किं चनास।

ऋ0वे0 10.129.3-तपसस्तन्महिनाजायतैकम्।

ऋ0वे0 10.129.4-कामस्तदग्रे समवर्तमाधि मानसो रेतः प्रथमं यदासीत्। सतो वन्धुमसति निरविन्दन ह्रदि प्रतीष्या कवयो मनीषा।

ऋ0वे0 10.72.3-देवानां युगे प्रथमे डसतः सदजायत।

NCERT- Class-VII-भूगोल

ऋ0वे0 10.129.3-तुच्छ्येनाभ्वपिहितं यदासीत् तपसस्तन्महिनाजायतैकम्।

ऋ0वे0 10.129.5-तिरश्चीनो विततो रिश्मरेषामधः।

ऋ0वे0 10.121.1-हिरण्यगर्भः समर्वताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यातुतेमां कस्मैं देवाय हविषा विधेम।।

ऋ0वे0 10.121.2

ऋ0वे0 10.90.1- सहस्रशीर्षा पुरूषः सहास्राक्षः सहस्रपात्।

ऋ0वे0 10.90.2-पुरूष एवेदं सर्वं यद्तं यच्च भव्यम्।

ऋ0वे0 10.90.50- तस्माद्विरालजायत।

वविधं राजन्ते वस्तूनि यत्र इति विराट्-सायण भाष्य।

ऋ0वे0 10.90.5-विराजो अधि पूरूषः।

ऋ0वे0-10.90.06-यत् पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

ऋ0वे0 10.90.6- वसन्तो अस्यासीदज्यं ग्रीष्म इध्मः, शरद्धविः।

यजु0 23.62 अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः

ऋ0वे0 10.85.43-शं नो भव द्विपद शं चतुष्पदे।

यजु0 36.22- अभयं नः पशुभ्यः।

ऋ0वे0 10.90.8-पशून् ताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान् ग्राम्याश्च ये। अ0वे0 19.06.14, यजु0 31.6

अ0वे0 3.10.6-ये ग्राम्यः पशवो विश्वरूपास्तेमां सप्तानां मयि रन्तिरस्तु।

अ0वे0 11.5.21-पार्थिवा दिव्याः पशव आरण्या ग्राम्याश्च ये। अपक्षाः पक्षिणश्च ये तो जाता ब्रह्मचारिणः।।

यजु0- 14.30

ऋ0वे0 7.4.5-तमोषधीश्च वनिनश्च।

अ0वे0 8.8.14-वनस्पतीन् वानस्पत्यानोषधीरूत वीरूधः।

कपिल देव-वेदों में विज्ञान, पृ0सं0-61

अ0वे0 11.7.21-ओषधयो वीरूधस्तृणा।

यजु0 12.75-101

अ0वे0 8.7.1-28 इत्यादि।

सन्दर्भ-ग्रन्थ

ऋग्वेद का सुबोध भाष्य	-	पं0 दामोदर सातवलेकर प्रकाशक-स्वाध्याय मण्डल, पारडी, 1993
ऋग्वेद (प्रथम से चतुर्थ) खण्ड)	-	पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य प्रकाशक-संस्कृति संस्थान, बरेली, संस्करण-2008
वैदिक संशोधन मण्डल	-	पूना, 1936 (सायण भाष्य सहित भाग 1 से 5 तक)
शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिन संहित	-	वासुदेव लक्ष्मण शास्त्री, हिन्दी व्याख्याकार-डॉ0 रामकृष्ण शास्त्री, प्रकाश-चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, पुनर्मुद्रित-2007ई0 (उव्वट महीधर भाष्य सहित)

शुक्त यजुर्वेद माध्यहिन्दन संहिता (उव्वट महीधर भाष्य सहित)	–	निर्णय सागर, बम्बई, 1929
अथर्ववेद	–	पं0 दामोदर सातवलेकर स्वाध्याय मण्डल पारडी 2001
अथर्ववेद	–	पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य ? प्रकाशक-संस्कृति संस्थान बरेली, संस्करण-2007(भाग 1 और भाग 2)
अथर्ववेद	–	एम0 ब्लूमफील्ड, हिन्दी अनुवादक-प्रो0 सूर्यकान्त, चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस वाराणसी, 1964)
वेद क्या कहते है ?	–	अभिलाष दास, प्रकाशक-कबीर पारख संस्थान इलाहाबाद, 2010 ई0)
वेद व विज्ञान	–	स्वामी प्रत्यागात्मानन्द सरस्वती, अनुवादिका-डॉ0 उर्मिला शर्मा, प्रकाशक-विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी-2004)
वेदों में विज्ञान	–	डॉ0 कपिल देव द्विवेदी प्रकाशक-विश्वभारती अनुसंधान परिषद ज्ञानपुर (भदोही), 2004)
पर्यावरण अध्ययन	–	डॉ0 दयाशंकर त्रिपाठी, प्रकाशक-मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2005, पुनर्मुद्रण-2007
भारतीय शिक्षा	–	डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद, प्रकाशक-प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2009
शैक्षिक परिवर्तन का यथार्थ	–	प्रो0 जगमोहन सिंह राजपूत, प्रकाशन- विद्या विहार, नई दिल्ली, संस्करण-2007